



DR. DILIP MAHALANABIS (POSTHUMOUS)

Dr. Dilip Mahalanabis was a world-renowned paediatrician and public health researcher. He pioneered the use of the oral rehydration solution for diarrhoeal diseases which transformed the management of this killer illness. He had worked extensively in India and abroad during his long career, initially promoting the use of ORS around the world with the support the World Health Organisation, and dedicated the later stage of his career in conduction and promoting research in public health.

2. Born on 12th November, 1934 in Kishoreganj, erstwhile East Bengal in British India, Dr. Mahalanabis and his family migrated to Calcutta during the partition. He received his MBBS from the Medical College, Calcutta. He went on to train in paediatrics in the UK's National Health Service. He worked in organisations such as John Hopkins International Center for Medical Research and Training, World Health Organisation and International Centre for Diarrhoeal Disease Research (ICDDR, B) Unit.

3. Dr. Mahalanabis's seminal work in the use of ORS in the management of Cholera and Diarrhoeal diseases happened during the Bangladesh war of Independence (1971), which had led to a huge influx of refugees to West Bengal. Faced with the high mortality in children and adult refugees and in the absence of basic medical facilities in the camps, he and his team worked tirelessly to tackle the problem in the catastrophic conditions. His stunning brainwave of using a readily available but carefully measured mix of glucose and some salts as an oral alternative to intravenous hydration dramatically reduced the mortality rate of the suffering children by about 90%.

4. Dr. Mahalanabis's work was noted by the World Health Organisation and he was given the responsibility to promote the use of ORS world-wide. He then joined the Diarrheal Disease Control Programme of the WHO. It is now estimated that the practice he promoted has saved anywhere between 50-100 million lives in the past few decades. He later became the Director of Clinical Research at ICDDR, B. He was also associated with Kolkata-based National Institute of Cholera and Enteric Diseases (NICED) and the Institute of Child Health. He went on to establish the Society for Applied Studies - a world-class clinical research unit based in Kolkata and New Delhi.

5. Dr. Mahalanabis's contribution in the field of public health had brought him numerous international accolades. He was elected as a member of the Royal Swedish Academy of Sciences (1994). He was awarded the Pollin Prize in Pediatric Research (2002) with Dr. Nathaniel Pierce, Dr. David Nalin and Dr. Norbert Hirschhorn. He received the Prince Mahidol (Thailand) for outstanding achievements in medicine and public.

6. Dr. Mahalanabis passed away on 16th October, 2022.



डॉ. दिलीप महलानाबिस (मरणोपरांत)

डॉ. दिलीप महलानाबिस एक विश्व प्रसिद्ध बाल रोग विशेषज्ञ और जन स्वास्थ्य शोधकर्ता थे। उन्होंने अतिसार रोगों के लिए पीने वाले रिहाइड्रेशन घोल के प्रयोग को आगे बढ़ाया जिससे इस घातक बीमारी के उपचार का तरीका बदल गया। उन्होंने अपनी लम्बी चिकित्सा यात्रा के दौरान भारत और विदेश में विपुल कार्य किया, शुरू में विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से दुनिया भर में ओआरएस के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया, और अपने करियर के बाद के समय को जन स्वास्थ्य में अनुसंधान और उसे बढ़ावा देने के प्रति समर्पित कर दिया।

2. 12 नवंबर, 1934 को ब्रिटिश शासन के अधीन भारत के तत्कालीन पूर्वी बंगाल के किशोरगंज में जन्मे, डॉ. महलानाबिस और उनका परिवार विभाजन के दौरान कलकत्ता चला आया था। उन्होंने मेडिकल कॉलेज, कलकत्ता से एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की। वह ब्रिटेन की राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा में बाल चिकित्सा में प्रशिक्षण के लिए गए। उन्होंने जॉन हॉपकिंस इंटरनेशनल सेंटर फॉर मेडिकल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, विश्व स्वास्थ्य संगठन और इंटरनेशनल सेंटर फॉर डायरिया डिजीज रिसर्च (आईसीडीडीआर, बी) यूनिट जैसे संगठनों में कार्य किया।

3. बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम (1971) के दौरान बड़ी संख्या में शरणार्थी पश्चिम बंगाल आए थे और उस समय डॉ. महलानाबिस ने हैजा और अतिसार रोगों के उपचार में ओआरएस का मौलिक प्रयोग किया। शिविरों में बुनियादी चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में बच्चों और बड़ी उम्र के शरणार्थियों की उच्च मृत्यु दर को देखते हुए उन्होंने और उनकी टीम ने भीषण परिस्थितियों में अथक प्रयास किया। इंटराविनस हाइड्रेशन के विकल्प के रूप में ग्लूकोज और कुछ लवणों के आसानी से उपलब्ध लेकिन समझदारी से नपे-तुले पीने योग्य मिश्रण के प्रयोग की उनकी अद्भुत प्रतिभा ने असाधारण ढंग से पीड़ित बच्चों की मृत्यु दर लगभग 90% कम कर दी।

4. विश्व स्वास्थ्य संगठन का ध्यान डॉ. महलानाबिस के कार्य की ओर गया और उन्हें दुनिया भर में ओआरएस के इस्तेमाल को बढ़ावा देने की जिम्मेदारी सौंपी गई। इसके बाद वह विश्व स्वास्थ्य संगठन के अतिसार रोग नियंत्रण कार्यक्रम में शामिल हो गए। अब ऐसा अनुमान लगाया गया है कि उन्होंने जिस उपचार को बढ़ावा दिया, उससे पिछले कुछ दशक में 50–100 मिलियन लोगों की जान बचाई गई है। बाद में वह आईसीडीडीआर, बी में नैदानिक अनुसंधान निदेशक बने। वह कोलकाता स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हैजा एंड एंटरिक डिजीज (एनआईसीडी) और इंस्टीट्यूट ऑफ चाइल्ड हेल्थ से भी जुड़े हुए थे। उन्होंने कोलकाता और नई दिल्ली स्थित एक विश्वस्तरीय नैदानिक अनुसंधान इकाई सोसाइटी फॉर एप्लाइड स्टडीज की स्थापना की।

5. जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में डॉ. महलानाबिस के योगदान को देखते हुए, उन्हें कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। उन्हें रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज (1994) के सदस्य के रूप में चुना गया था। उन्हें डॉ. नथानिएल पियर्स, डॉ. डेविड नलिन और डॉ. नॉरबर्ट हिर्शहॉर्न के साथ संयुक्त रूप से बाल रोग अनुसंधान में बाल चिकित्सा अनुसंधान में पॉलिन पुरस्कार (2002) प्रदान किया गया। उन्हें चिकित्सा और जनस्वास्थ्य में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए प्रिंस माहिडोल (थाईलैंड) पुरस्कार दिया गया।

6. 16 अक्टूबर, 2022 को डॉ. महलानाबिस का देहावसान हो गया।